रिकार्ड–इस पाप की दुनियां में.....ओमशांति प्रातःक्लास 7.1.1967

मीठे2 कहीं दूर दुनियां में चलने वाले रुहानी बच्चों प्रति बाप गुडमार्निंग भी कर रहे हैं।रुहानी बच्चे (जानते) नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कि हम बरोबर कहीं दूर जा रहे हैं।कहां?अपने स्वीट साइलेंसहोम।शांतिधाम ही .....दूर है।स्वर्ग कोई दूर नहीं है।शांतिधाम दूर है जहां से हम आत्मायें आती हैं।वो है मूलवतन।यह है स्थूलवतन।वो है हम आत्माओं का घर।उर घर में बाप बिगर तो कोई ले जा नहीं सकते।तुम सब ब्राह्मण ब्राह्मणियां रुहानी सेवा कर रहे हो।किसने सिखाई है?दूर ले चलने वाले बाप।कितनों को ले जावेंगे?अनगिनत है।एक पंडे के तुम बच्चे भी कितने पंडे हो।तुम्हारा नाम ही है पांडव सेना।तुम बच्चे हर एक को दूर ले चलने लिए युक्ति बताते हो।मनमनाभव।बाप को याद करो।कहते भी हैं ना इस दुनियां से कहीं दूर ले चलो।नई दुनियां में तो ऐसे नहीं कहेंगे ना।यहां है रावणराज्य।तो कहते हैं इससे दूर ले चलो।जहां चैन हो।इसका नाम ही है दुःखधाम।अब बाप तुमको कोई धक्का नहीं खिलाते हैं।भक्तिमार्ग में तुम बाप को ढूंढने लिए कितने धक्के खाते हो।बाप खुद कहते हैं मैं हूं ही गुप्त।इन आंखों से कोई देख नहीं सकते हैं।मुझे पैर है नहीं।कृष्ण के मंदिर में माथा टेकने लिए चाखडी रखते हैं।मेरे तो पैर हैं नहीं जो तुमको माथा टेकना पड़े।तुमको तो सिर्फ कहता हूँ लाडले बच्चों तुम बच्चे भी औरों को कहते हो भाइयों पारलौकिक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें।बस और कोई तकलीफ नहीं हैं।जैसे बाप हीरे जैसा बनाते हैं, बच्चे भी औरों को हीरे जैसा बनाते हैं।यह सिखाना है।मनुष्यों को हीरे जैसा कैसे बनावें?ड्रामाअनुसार कल्प पहले मुआफिक कल्प2 के संगम पर बाप आकर हमको सिखाते हैं।हम फिर औरों को सिखाते हैं।बाप हीरे जैसा बना रहे हैं।तुमको मालूम है एक खोजों का गुरू है उन्होंने उनको सोने ,चांदी, हीरों में वज़न किया था।नेहरू को सोने में वज़न किया था।उनको तो हीरों में किया था।इतने हीरे कहां से लायें?था भी आखान बहुत मोटा।विलायत से उधार पर हीरे लिये थे।वज़न कर और वापस दे दिये।अब वो कोई हीरे जैसा बना था क्या?कैसे2 गंदे काम करते रहते।कित(नी) अंधश्रद्धा है।अभी बाप जो तुमको हीरे जैसा बनाते हैं किसमें वज़न करना चाहिए।तुम हीरे आदि क्या करेंगे?वो लोग तो रेस में बहुत पैसा उड़ाते रहते हैं।मकान ,प्रापर्टी बनाते रहते हैं।तुमको तो प्रापर्टी कुछ भी बनानी नहीं है।हुक्म नहीं है।तुम कोई से लो तो फिर 21जन्मों लिए भर कर देना पड़े।तुम बच्चे तो सच्ची कमाई कर रहे हो।बाकी सब है झूठी कमाई।खतम हो जाने वाली।नहीं तो बाबा ऐसे क्यों करते?बाबा ने देखा यह तो कौड़ियां हैं।हमको तो हीरे मिलते हैं।तो फिर यह कौड़ियां क्या करेंगे?क्यों ना बाप से बेहद का वर्सा लेवें।खाना तो मिलना ही है।एक पहाका भी है।हाथ जिसका ऐसे पीला पूर वे पाये लेते।बाप को शर्राफ भी कहते हैं।तो बाप कहते हैं मैं तुम्हारी हर पराई चीज़ से एक्सचेंज करता हूँ।कोई मरता है तो पुरानी चीज़ करनीगोर को दे देते हैं ना।बाप कहते हैं मैं तुमसे लेता क्या हूँ?यह सैम्पुल देखो।द्रौपदी भी कोई एक तो नहीं थी ना।तुम सब द्रौपदियां हो।बहुत पुकारती हैं ना हमको नंगा होने से बचाओ।बहुत मारते हैं।हाथ–पांव बांध देते हैं।फिर हम क्या करें?बेहोश कर लेते हैं।ऐसे हालात में हमारे उपर दोष है?बाप कहते हैं नहीं बच्चे।तुम्हारे उपर पाप नहीं आता है।तुम परवश हो।दिल से तो गंद नहीं करते हो ना।बाप कितने प्यारे से समझाते हैं बच्चे यह अंतिम जन्म पवित्र बनो।बाप कहते हैं ना बच्चो को कि मेरी दाढ़ी की लाज रखो।कुल को कलंक नहीं लगाना।तुम मीठे2 बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए।बाप तुमको हीरे जैसा बनाते हैं।इनको भी वो बाप हीरे जैसा बनाते हैं।उनको याद करना है।यह बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश नहीं होंगे।मैं बाप की श्रीमत लेकर तुमको देता हूँ।तो याद बाप को करना है।मैं तुम्हारा गुरू नहीं हूँ।वो हमको सिखाते हैं।हम फिर तुमको सिखाते हैं।हीरे जैसा बनना है तो बाप को याद करो।बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग में भल कोई देवता की भक्ति करते रहते हैं फिर भी बुद्धि दुकान, धंधे आदि तरफ भागती रहती है।

क्योंकि इसमें आमदनी होती है।बाबा की बुद्धि इधर–उधर भागती थी तो अपने को चमाट मारते थे कि यह याद क्यों आता है।तो अब हम आत्माओं को एक बाप को ही याद करना है ; परंतु माया घड़ी2 याद भुला देती है।गुस्सा लगता है माया बुद्धियोग क्यों तोड़ देती है।ऐसे2 अपने साथ बातें करनी चाहिए।बाप कहते हैं अपना भी कल्याण करो, दूसरों का भी कल्याण करो।सेंटर्स खोलो।ऐसे बहुत बच्चे लिखते हैं।बाबा फलानी जगह सेंटर खोलो।बाप कहते हैं मैं तो दाता हूँ।हमको कुछ दरकार नहीं है।यह मकान आदि भी तुम बच्चों के लिए बनाया है ना।शिवबाबा तो तुमको हीरे जैसा बनाने आये हैं।तुम जो कुछ करते हो वो तुम्हारे ही काम में आता है।यह कोई गुरू आदि नहीं जो चेला आदि बनावे।मकान बच्चे ही बनाते हैं अपने रहने लिए।हां, बनाने वाले भी आ जाते हैं तो खातरी की जाती है।आप उपर में नये मकान में जाकर रहो।कोई तो कहते हैं हम नये मकान में क्यों रहें?हमको तो पुराना ही अच्छा लगता है।जैसे आप रहते हो वैसे हम भी रहेंगे।हमको कोई अहंकार नहीं है कि मैं देता हूँ।बापदादा ही नहीं रहते हैं तो फिर मैं क्यों रहूँ?हमको भी अपने साथ रहाओ।जितना आपके नजदीक होंगे उतना अच्छा है।बाप समझाते हैं तो जितना पुरुषार्थ करेंगे तो सुखधाम में उंच पद पावेंगे।स्वर्ग में तो सब चलेंगे ना।भारतवासी जानते हैं भारत पुण्य आत्माओं की दुनियां थी।पाप का नाम नहीं था।अभी तो पापात्माओं की दुनियां है।यह है रावणराज्य।सतयुग में रावण होता नहीं।रावण राज्य होता ही है आधाकल्प बाद।कितना समझाया जाता है ; परंतु बंदरबुद्धि समझते ही नहीं हैं।गायन भी है बंदरों के आगे रत्न रखो तो उसको पत्थर समझ कर फेंक देंगे।बाप इतना समझाते हैं तो भी समझते नहीं हैं।कल्प2 ऐसे होता आया।नई बात नहीं हैं।तुम प्रदर्शनियां करते हो कितने ढेर आते हैं।प्रजा तो बहुत बनेगी।हीरे जैसा बनने में तो टाइम लगता है।प्रजा बन जावे वो भी अच्छा।अभी है ही कयामत का समय।सभी का हिसाब–किताब चुक्तू होना है।8की माला तो बनी हुई है।वो हैं पास विद ऑनर।8दाने ही नम्बरवन में जाते हैं।जिनको जरा भी सजा नहीं मिलती है।कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं।फिर हैं 108 ।नम्बरवार तो होंगे ना।यह बना बनाया अनादि ड्रामा है जिसको साक्षी होकर देखते हैं कि कौन अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। जैसे देखो, मोहिनी (देहली वाली) बच्ची पीछे आई है।श्रीमत पर चलती रहती है।ऐसे ही श्रीमत पर चलती रहे तो पास विन आनर्स 8की माला में आ सकती है।....चलते2 कब2 ग्रहचारी भी आ जाती है।यह सबकी लाही चाढ़ी आती है।यह कमाई है।कब बड़ी खुशी में रहेंगे, कब कम।माया का तूफान अथवा किसी का संग थोड़ा हटा देता है।गाया भी हुआ है संग तारे कुसंग बोढ़े।अब रावण का संग बोड़े।राम का संग तारे।रावण की मत ही ऐसी है।देवतायें भी वाममार्ग में जाते हैं तो उनके चित्र कैसे गंदे दिखाते हैं।यह निशानी है वाममार्ग में जाने की।भारत में ही रामराज्य था।भारत में ही अब रावणराज्य है।रावणराज्य में 100परसेंट दुःखी बन जाते हैं।यह खेल है।यह नालेज किसी को भी समझाना बड़ा सहज है।बाबा इस बच्ची को कहते हैं तुम नर्स हो ,वो सर्विस भी करती रहो।तो साथ2 तुम यह सर्विस भी बहुत कर सकती हो।पेशेन्ट्स को भी यह ज्ञान सुनाती रहो कि बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।फिर 21जन्मों लिए फिर तुम रोगी नहीं बनेंगे।योग से हेल्दी और इस चक्र को जानने से वेल्दी बनते हैं।तुम तो बहुत सर्विस कर सकती हो।बहुतों का कल्याण करेंगी ,पैसे भी जो मिलेंगे वो भी इस रुहानी सेवा में लगावेंगी।वास्तव में तुम भी सब नर्स हो ना छी2 गंदे मनुष्यों को देवता बनाने।यह नर्सपना है।बाप भी कहते हैं मुझे डर्टी पतित मनुष्य बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ।तुम भी रोगियों की यह रुहानी सेवा करो तो तुम पर वो कुर्बान जावें।तुम्हारे द्वारा सा. भी हो सकता है।अगर योगयुक्त हो।बड़े2 सर्जन्स आदि तुम्हारे पावों पर आकर पड़े।तुम करके देखो।यहां बादल आते हैं रिफ्रेश होने फिर जाकर वर्षा कर रिफ्रेश करेंगे।कई बच्चियों को यह पता नहीं रहता कि वर्षा कहां से आती है।समझती हैं इन्द्र वर्षा करते हैं।इन्द्रधनुष कहते हैं ना।शास्त्रों में कितनी

कथायें हैं।बाप कहते हैं यह फिर भी (होगा)।ड्रामा में नूंध है।हम किसी की निंदा नहीं करते हैं।यह तो बना बनाया ड्रामा है।समझाया जाता है यह भक्तिमार्ग है।कहते भी हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग।बच्चों को इस पुरानी दुनियां से वैराग है।गृहस्थ व्यवहार में रहते पुरानी दुनियां से वैराग है।आप मुये मर गई दुनियां।आत्मा शरीर से अलग हो गई तो दुनियां ही खलास।तो बाप बच्चो को समझाते हैं पढ़ाते हैं गफलत मत करो।सारा मदार पढ़ाई पर है।बैरिस्टर कोई तो एक केस का लाख रुपया कमाते हैं और कोई बैरिस्टर.....कोई भी नहीं होगा।पढ़ाई पर मदार है।यह पढ़ाई तो बहुत उंची है।स्वदर्शनचक्रधारी बनना है अर्थात् अपने 84जन्मों की आदि ,मध्य,अंत को जानना है।अब इस सारे झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था है।(बड़ के झाड़ का मिसाल) फाउंडेशन है ही नहीं।बाकी सारा झाड़ खड़ा है।वैसे यह आदि सनातन देवी देवता धर्म जो था वो अभी है नहीं।धर्मभ्रष्ट कर्मभ्रष्ट बन गये हैं।यह ड्रामा का राज़ बाप बैठ समझाते हैं।मनुष्य किसी को सद्गति दे नहीं सकते।वो तो दुर्गति ही करेंगे।लौकिक गुरू सब दुर्गति करने वाले ठहरे।इसलिए बाप कहते हैं इन गुरूओं को मारो गोली।कन्याओं द्वारा ज्ञान बाण मरवाये हैं।बाकी मारने की कोई बात ही नहीं है।फिर कहते हैं गंगा जल निकाला वो उनको पिलाया।कितनी बातें लिख दी हैं।ऐसे भी बहुत .....हैं जो गंगा जल विलायत में भी साथ ले जाते हैं।शंकराचार्य भी गंगाजल पीता रहता है।उसको अमृत समझते हैं।अब है तो वो पानी।जरूर पापात्मा है तब तो गंगाजल पीते हैं ना।पतित हैं तब तो गंगा पर स्नान करने जाते हैं।बाप बैठ कर यह सब बातें समझाते हैं।बाप को ही याद करते हैं।बाबा हमारे दुःख हर.....सुख दो।तुम सदा के लिए सुखी बन जाते हो।कब अकाले मृत्यु नहीं होगा।फलाना मर गया यह अक्षर वहां होते नहीं हैं।यह (भाषा) ही नहीं।तो बाप राय देते हैं बहुतों को रास्ता बताओगी तो वो तुम पर कुर्बान जावेंगे।किसी का सा. भी हो सकता है ;परंतु सा. है सिर्फ एम ऑब्जेक्ट।इसके लिए पढ़ना तो पड़े ना।(पढ़ने) बिना थोड़े ही बैरिस्टर बन जावेंगे।ऐसे नहीं कि सा. हुआ माना मुक्ति हुई।मीरा को सा. हुआ ऐसे (नहीं) कि वो विष्णुपुरी चली गई।नौधा भक्ति करने से सा. होता है।यहां फिर है नौधा याद।वो भक्ति दुर्गति है।..... है सद्गति।रामतीर्थ भी कृष्ण का भक्त था।कृष्ण के दीदार के लिए अपनी छाती चीरने लगा तो सा. हो गया। (अच्छा), सा. हुआ तो फिर क्या हुआ?भक्त था, वैकुण्ठ में नहीं गया।वो तो सन्यासी बना है।सन्यासी फिर भक्ति कर ना सकें।वो फिर ब्रह्म ज्ञानी तत्व ज्ञानी बन गया।ब्रह्म में लीन होना है।अब तो ब्रह्म परमात्मा (ही) है।भक्ति मार्ग में कितना (धोले) हैं।(मीरा का मिसाल) तो बाप बच्चों को सब राज़ समझाते हैं।कहते हैं (अपना) धंधा आदि शरीर निर्वाह के लिए भले करो ; परंतु (सरेंडर) ,अपने को ट्रस्टी समझ कर।तो उंच पद मिलेगा।ममत्मव मिट जावेगांयह बाबा लेकर क्या करेगा?इसने तो सब छोड़ा।घर–बार वा महल आदि तो बनाना (नहीं) है।यह मकान बनाते हैं ;क्योंकि ढेर बच्चे आते आवेंगे।आबू रोड से लेकर यहां तक क्यू लग जावेगी।तुम्हारा.....प्रभाव निकले तो माथा ही खराब कर देवें।बड़े आदमी आते हैं तो कितनी भीड़ हो जाती है।तुम्हारा प्रभाव निकलना है पिछाड़ी में।अभी नहीं।भले कोई भी बड़ा आदमी हो ,राजा हो ,मिल नहीं सकेंगे।पहले 7रोज (भट्ठी) में रहें तो आ सकें।अभी तक तो बहुत पुरुषार्थ करना है।बाप को याद करने का अभ्यास करना ही है।ताकी पाप कट जावें।फिर यह शरीर छोड़ना पड़े।ऐसे ही याद में शरीर छोड़ना है।सतयुग में शरीर (छोड़ेंगे) समझेंगे यह छोड़ दूसरा नया लेंगे।जैसे सर्प का मिसाल है।सन्यासियों को थोड़े ही पता है कि स्वर्ग में शरीर छोड़ते हैं।वहां अकाले मृत्यु कभी होती नहीं है।सा. होता है बस, आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती है।यहां तो देह का अभिमान कितना रहता है।फर्क है ना।यह सब बातें नोट करनी और (सुनानी) चाहिए।औरों को भी अपने समान हीरे जैसा बनाने पड़े।कितना पुरुषार्थ करेंगे उंच पद पावेंगे।यह बाप समझाते हैं।यह कोई साधु, महात्मा नहीं है।इस पर एक गीत भी बनाया हुआ है।साधु संत.....वो तो सब (सर्वव्यापी) कह कर ग्लानी करते हैं।बाप आकर स्वर्ग बनाते हैं।उनकी ग्लानी कर देते हैं।अच्छा ,ओमशांति।